उपसंहार

मानव-जीवन की इस व्यापक भूमियों को समेटनेवाला नागर जी का व्यक्तित्व सच पूछा जाय तो एक उन्मुक्त और जीवन्त कथा लेखक का है। नागर जो एक व्यक्ति नहीं, परंपरा के सार्थवाह हैं,जो अतीत को वर्तमान से और वर्तमान को भावी से जोडती है। नागर जी की लेखनी ने हिन्दी गध साहित्य की विविध विधाओं का स्पर्श किया है और वे हर प्रकार की रचना में सफल हुए हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य के सात अध्याय है।

प्रथम अध्याय के अंतर्गत अमृतलाल नागर के व्यक्तित्व को स्पष्ट किया है। नागर जी का व्यक्तित्व एक ईमानदार सच्चे भारतीय लेखक का व्यक्तित्व है,जिसमें कुण्ठायें कहीं भी नहीं हैं, एक ऐसी लगन है जो उसे नई-नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर कर रही है। यह उस लेखक का व्यक्तित्व है जो जितना ही व्यक्ति की गरिमा के प्रति सचेष्ट है,उतना ही सामाजिक दायित्व के प्रति भी उसके साथ एक सजीव जनता है,उसकी परंपरायें हैं, उसकी आशायें उसकी शक्ति,उसके संकल्प विश्वास और असंगतियाँ भी हैं। उसके पास वह आस्था है जिसके प्रकाश में वह अंधकार के बीच भी अपनी राह पहचान लेता है। यही आस्था जीवन के सारे विष को बरदाश्त करके भी उसके अमृतत्व के प्रति समर्पित किये हुए हैं।

द्वितीय अध्याय में --` अमृतलाल नागर के साहित्य का संक्षिप्त परिचय दिया है। नागर की औपन्यासिक यात्रा हिन्दी उपन्यास साहित्य में शीर्ष-स्थानीय है। उनकी ज्यादात्तर कहानियाँ हास्य-व्यंग्य प्रधान है। उपन्यासकार, कहानीकार,देखा-चित्रकार, संस्मरणकर्ता,नाट्य सर्जक और व्यंग्य लेखक। वे पत्रकार भी थे, अनुवादक भी थे और स्वतंत्र प्रकृति के होने के कारण तथा समय की आवाज को सुनते हुए फिल्मी कथाओं के लेखक भी। अमृतलाल नागर न केवल वर्तमान के चितेरे हैं, बल्कि इतिहास को समेटते हुए उनकी दृष्टि कवि शिरोमणि तुलसीदास के काव्य में घुली हुई उनके जीवन के नेपथ्य की अंतरंगता को भी औपन्यासिक शिल्प

में ढाल सकी है। सामाजिक यथार्थवादी उपन्यासकार के रुप में भी नागर जी में हिन्दी-साहित्य जगत में अपना स्थान बना लिया है। स्वातं्र्योत्तर भारतीय समाज उनके उपन्यास साहित्य में अमरत्व पा गया है।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत " बूँद और समुद्र " उपन्यास को कथावस्तु का विवेचन किया है। उपन्यास के कथावस्तु पर बिखराव असंगठितता असौष्ठव आदि आरोप लगाये गये हैं। कथानक के गठन में आकार के साथ-साथ उसके प्रस्तुत करने का विधान रचना को सौष्ठव और सौन्दर्य प्रदान करता है। लेखक ने मूल कथा के अतिरिक्त इसमें अनेकानेक चित्र वर्णन और प्रासंगिक कथाओं को योजना की है। कथावस्तु की व्यापकता और जटिलता में यह शिथिलता कथा को चिन्तनप्रद रुप प्रदान करती है किन्तु नागर जी का कथा कहने का लोहजा उस लय और गति के साथ-साथ भरपूर रोचकता प्रदान करता है। लोकजीवन और संस्कृति उनकी कलम की नोक से फोटोग्राफी के रंगो में निखरी है। यह अकृत्रिम अभिव्यक्ति एक ओर लखनऊ के रेशे-रेशे को चित्रित कर गई है, दूसरी ओर भारत का शहरीपन साकार हो गया है। ` बूँद और समुद्र ` का कथा-शिल्प कतिपय अतिरेकी घटना प्रसंगों की आयोजना के बावजुद प्रशस्य है। उसमें संगठन कौतुहल और रंजनकारी तत्वों की उपयुक्त निबंधना हुई है। निस्संदेह यह एक सफल कथानक है।

चतुर्थ अध्याय में -- " बूँद और समुद्र " उपन्यास के पात्रों का चरित्र विश्लेषण किया है। ` बूँद और समुद्र " में विभिन्न प्रवृत्तियों और रुचियों के पात्र है। ये पात्र स्वातं्र्योत्तर भारतीय समाज जीवन के विभिन्न पुरुष और स्त्री रुपों का प्रतिनिधित्व करतें हैं। सभी प्राप्त यथार्थ जीवन से लिये है, यह अपनी यथार्थ भाषा,लेकर उपन्यास में अवतरित होते हैं। उपन्यास में प्रत्येक पात्र की अपनी भाषा अलग है। उन्होंने अपने कथा-कृतियों में कलकत्ता,बंबई,मद्रास, दिल्ली,लखनऊ,आगरा,बनारस की बोलियों के सूक्ष्म भेदोपभेदों का प्रयोग किया है। सभी पात्र अपनी-अपनी बोली में अपने-अपने लहजे से बात करते हैं। ` बूँद और समुद्र " नागर जी की इस विशेषता के कारण लखनऊ का` भाषा सर्वेक्षण ` बन गया है।

पंचम अध्याय के अंतर्गत ' बूँद और समुद्र ' उपन्यास में देशकाल वातावरण को स्पष्ट किया है। नागर जी की दृष्टि देशकाल वातावरण के चित्रण पर अधिक रही है। उन्होंने स्वातंत्र्योत्तर कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक,पृष्ठभूमि का चित्रण कुशलतापूर्वक किया है। समाज के तेजी से बदलते हुए प्रतिमान नई पुरानी मान्यताओं का संघर्ष,पुरानी चालों के लोग और उनके अंध:विश्वास नई पीढी के लोग और उनके रहन-सहन तथा अचार-विचार समाज की अर्थिक,राजनीतिक गतिविधियाँ आदि बातों का सजीव चित्रण नागर जी ने किया है। लखनऊ के एक मुहल्ले के माध्यम से मानो पुरे देश के वर्तमान स्वरुप को उद्घाटित किया गया है।

षष्ठ अध्याय में --' बूँद और समुद्र ' उपन्यास की भाषा-शैली का विवेचन किया है। नागर जी ने भाषा का प्रयोग साधिकार किया है। भाषा में जितनी विविधता और रोचकता है, शायद ही दूसरें किसी हिन्दी के उपन्यास में मिलें। भाषा प्रसाद गुण से संपन्न है। पर उसमें वक्रता,अर्थ-भंगिमा और अभिव्यक्ति की पूर्ण क्षमता विद्यमान है। भाषा कहीं व्यंग्य-पूर्ण और चुटीली कहीं चित्रमयी और बिंबमयी कहीं अलंकृत और काव्यात्मक कहीं अंग्रेजी,उर्दू,मिश्रित और कहीं मुहल्लें की बोलचाल की है।

शैली की दृष्टि से प्रधानतया वर्णनात्मक शैली को आधार बनाकर कथा-विकास चरित्रों का उद्घाटन वातावरण निर्मिती को है। संवाद शैली में पात्रों का विभिन्न मनोवृत्तियों का चित्रण हुआ है।' नागर जी की शैली का महत्वपूर्ण गुण है जो प्रस्तुत उपन्यास में देखा जा सकता है।

सप्तम अध्याय में --' बूँद और समुद्र ' उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट किया है। ' बूँद और समुद्र ' में लेखक ने वैयक्तिक समस्याओं में व्यक्ति को व्यक्तिगत समस्याओं को उठाया है। आज के मध्यवर्गीय व्यक्ति की पीडा,घुटन,कुण्ठा - अविश्वास,अनैतिकता आदि का उद्घाटन किया है। उसके साथ ही राजनीतिक समस्याओं के ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। वैयक्तिक राजनीतिक समस्याओं के साथ ही सामाजिक समस्याओं का वर्णन भी इस उपन्यास में किया है।

सबसे महत्वपूर्ण समस्या स्त्री और पुरुष के पारंपास्पारिक संबंधों की है ।

" बूँद और समुद्र " का उद्देश्य व्यक्ति और समाज के सामंजस्य को प्रस्तुत करके युगीन जीवन की समस्याओं का उद्घाटन करता हैं ।

अनुसंधान की उपलब्धियाँ --

१) क्या ` बूँद और समुद्र ` उपन्यास में मध्यम-वर्गीय नागरिक जीजन का सफल चित्रण हुआ है ?

मध्यवर्गीय के अंतर्गत (अ) निम्नमध्यवर्ग और (ब) उच्च मध्यवर्ग दो प्रकार के होते हैं । सज्जन के नये पुराने नौकर,लाले दलाल मभूति सुनार के परिवार के लोग,लाले और उसकी बहू,विरहेश,लाला पुकुन्दीलाल,बाबू रामस्वरुप , बाबू गुलाबचन्द,छेदालाल आदि न जाने कितने पात्र है जो निम्न वर्ग से आये हैं । उच्च मध्यवर्ग के अंतर्गत मुख्यपात्र ताई,सज्जन,वनकन्या,महिपाल,कर्नल, शीला आदि हैं । इसप्रकार ` बूँद और समुद्र ` में मध्यवर्गीय के अंतर्गत उच्च और निम्न मध्यवर्गीय नागरिक जीवन का सफल चित्रण हुआ हैं ।

२) क्या ` बूँद और समुद्र ` आँचलिक उपन्यास हैं ?

अगर ` अँचल ` का तात्पर्य अविकसित अपरिचित ग्रामभूमियों और उनके निवासियों तक सीमित न रहकर नागरिक जीवन के विशिष्ट वर्गों या समूहों, गली-मुहल्लों के जीवन तक विस्तृत हो सकता है तो ` बूँद और समुद्र " निश्चित रुप से आँचलिक उपन्यास है । आँचलिक उपन्यासों की भाँति इस उपन्यास में भी लखनऊ के चौक के जीवन की विशिष्टता को उसके समग्र आयामों में चित्रित किया गया है । लेखक ने वहाँ के लोकजीवन,समाज, संस्कृति,धर्म,आर्थिक,राजनीतिक चेतना,अंन्धविश्वास ,लोकाचार,लोकगीत, भाषा,लहजा,वेशभूषा आदि सभी पक्षों को समेट लेने का सफल प्रयास किया है । इसलिए यह आँचलिक उपन्यास है ।